एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।
धरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।। ३६ ।।

सखियों तथा वालाजी के यह सुन्दर स्वरूप और यह सुन्दर वृन्दावन तथा यमुनाजी का सुन्दर किनारा इस ब्रह्माण्ड में नहीं हैं और परमधाम से भी अलग हैं। यह ब्यौरा (विवरण) तारतम ज्ञान से श्री राजजी महाराज ने बताया है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

रामत पेहेली–राग कालेरो

वाले वेख लीधो रलियामणो, कांई करसूं रंग विलास।
आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस।
सखीरे हम चडी। १ ।।

वालाजी ने सुन्दर आकर्षक स्वरूप धारण किया है। अब इनके साथ आनन्द की रामत खेलेंगे। हमारी बहुत चाहना है जिसे वालाजी पूर्ण करेंगे। सखियों के अन्दर आनन्द और जोश भरा है।

वृंदावन तो जुगते जोयूं, स्याम स्यामाजी साथ।
रामत करसूं नव नवी, कांई रंग भर रमसूं रास।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि श्यामा श्याम के साथ वृन्दावन अच्छी तरह देख लिया है। अब हम नई-नई रामतें आनन्द में विभोर होकर खेलेंगे।

सखी मांहों मांहें वात करे, आज अमे थया रलियात।
वेख निरखीने नेत्र ठरे, आज करसूं रामत निघात।। ३ ।।

सखियां आपस में बात करती हैं कि आज हम धन्य-धन्य हो गई हैं। वालाजी का लुभावना भेष देखकर हमारे नेत्र सन्तुष्ट हो रहे हैं। आज वालाजी के साथ बहुत रामतें खेलेंगे।

वेख नवानो वागो पेहेर्यो, तेड्या वृंदावन।
मस्तक मुकट सोहामणो, वेख ल्याव्या अनूपम।। ४ ।।

वालाजी ने नए वस्त्र धारण किए हैं। सिर पर मुकुट धारण कर लुभावना भेष बनाकर हमको बुलाया है।

भली भांतना भूखण पेहेरया, वेण रसालज वाय।
साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसूं रामत उछाय।। ५ ।।

वालाजी ने अति सुन्दर आभूषण पहने हैं। मधुर बांसुरी बजाते हैं, सब सखियों के बीच आकर खड़े हैं। अब हम उनसे उमंग भरी रामतें खेलेंगे।

तेवा भूखण ने तेवो वागो, नटवरनो लीधो वेख।
घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे वसेख।। ६ ।।

जैसे सुन्दर आभूषण हैं वैसे ही सुन्दर वस्त्र धारण कर नाचने का भेष बनाया है। ब्रज में बहुत दिन खेल खेले, परन्तु आज विशेष खेल खेलेंगे।

रास रमवाने वालेजी अमारे, आज कीधो उछरंग।
नेंणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद।। ७ ।।

रास खेलने के लिए वालाजी मन में उमंग लेकर हमें बार-बार देखकर हमारे अन्दर प्रेम पैदा करते हैं। ऐसे मनमोहक मुख को देखकर मैं बलि-बलि जाती हूं।

Nijanand App

सखी इंद्रावती एम कहे, चालो जैए वालाजी ने पास।
कंठ वलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, चलो हम वालाजी के पास चलें और उनके गले में हाथ डालकर आनन्द की लीला खेलें।

एवी वात सांभलतां वालेजी अमारे, आवीने ग्रही मारी बांहें।
कहो सखी पेहेली रामत केही कीजे, जे होय तमारा चित मांहें।। ९ ।।

हमारी यह बात सुनकर वालाजी ने आकर हमारी बांह पकड़ ली और पूछने लगे, हे सखी! अपने मन की बात बताओ, पहले कौन-सी रामत खेलें।

सखियो मनोरथ होय ते केहेजो, रखे आणो ओसंक।
जेम कहो तेम कीजिए, आज करसूं रामत निसंक।। १० ।।

वालाजी कहते हैं, बेधड़क होकर अपने मन की चाहना बताओ, जैसे तुम कहोगी वैसे ही किया जाएगा। आज निडर होकर रामत खेलेंगे।

पूरूं मनोरथ तमतणां, करार थाय जीव जेम।
सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करूं हूं तेम।। ११ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखी! तुम मेरे जीव के जीवन हो। इसलिए जिस तरह से तुमको आनन्द आए तथा तुम्हारे मन की इच्छा पूर्ण हो, वही काम मैं करूं।

रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार।
सघली रामत संभारीने, अमने रमाडो आधार।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं, रास की रामतें तो बेशुमार हैं, इसलिए सबको ध्यान में रखकर हमें रामत खिलाइए।

अमे रंग भर रमवा आवियां, कांई करवा विनोद हांस।
उत्कंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हम उमंग के साथ हंसी और विनोद करने आए हैं। हमारे मन में बहुत इच्छाएं हैं। हम सबकी सब कामनाओं को पूरा करो।

अमे अवसर देखी उलासियो, कांई अंगडे अति उमंग।
कहे इंद्रावती अमने, तमे सहुने रमाडो संग।। १४ ।।

यह अवसर देखकर हमारे मन में उल्लास भर गया है। हमारे मन में उमंग है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आप हम सबको अपने साथ खेल खिलाइए।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ४२५ ।।

चरचरी

मारे वालैए करी उमंग, सखी सर्वे तेडी संग।
रमाडे नव नवे रंग, अदभुत लीला आज री।। १ ।।

हमारे वालाजी ने उमंग भरे मन से सब सखियों को बुलाया है और आज नए-नए तरीके से अद्भुत खेल खिला रहे हैं।

Nijanand App